भगवान बुद्ध के महाश्रावक

महाकच्चान

(संक्षिप्त कहे का विस्तार से अर्थ करने वालों में अग्र)

विपश्यना विशोधन विन्यास

भगवान बुद्ध के महाश्रावक

महाकच्चान

(संक्षिप्त कहे का विस्तार से अर्थ करने वालों में अग्र)

विपश्यना विशोधन विन्यास

धम्मगिरि, इगतपुरी

H109 - महाकच्चान

© विपश्यना विशोधन विन्यास
सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : जून २०२३

मूल्य : रु.
Price: Rs.

ISBN 978-81-7414-460-7

प्रकाशकः
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२ ४०३
जिलाः नाशिक, महाराष्ट्र
फोनः ०२५५३-२४४०९८, २४३५५३, २४४०७६,
२४४०८६, २४४१४४, २४४४४०
Email: vri_admin@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org

मुद्रकः
अपोलो प्रिंटिंग प्रेस
२५९, सीकॉफ लिमिटेड, ६९ एम. आय. डी. सी.,
सातपुर, नाशिक-४२२००७, महाराष्ट्र

भगवान बुद्ध की उद्घोषणा

“एतदग्गं भिक्खवे! मम सावकानं भिक्खूनं
संखित्तेन भासितस्स वित्थारेन अत्थं विभजन्तानं
यदिदं महाकच्चानो।”

“भिक्षुओ मेरे भिक्षु-श्रावकों में संक्षिप्त कहे का विस्तार से
अर्थ करने वालों में अग्र हैं महाकच्चान।”

– *अङ्गुत्तरनिकाय (१.१.१९७)*

महाकव्यान

भगवान बुद्ध के महाश्रावक
महाकच्चान

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय 7

महाकच्चान..9

जन्म और प्रव्रज्या 9

पुरोहित परिवार में जन्म 9

प्रव्रज्या ग्रहण की 9

महाकच्चान का महानुभाव 11

अनमोल केश 11

पुण्यफल तत्काल 12

श्रद्धा बढ़ती ही गई 13

कुशल धर्मोपदेशक 14

वृद्ध और युवा की परिभाषा 14

सभी धर्म एक समान.. 15

कामभोग एवं मतवाद विवाद के हेतु 20

छः अनुस्मृतियों की देशना 22

महाकच्चान– शिष्य सोण कुटिकण्ण.......................26

जन्म 26

उपासक से भिक्षु बना 26

भगवान के दर्शन 27

धर्म का साधुकार 30

स्थविर बेटे ने मां को धर्मोपदेश दिया.................... 31

भगवान द्वारा धर्मोपदेश 33
श्रेष्ठ व्याख्याकार 36
कर्तव्य पूरा कर लिया है 36
मैं लोगों की संगति नहीं करता - 1 37
मैं लोगों की संगति नहीं करता - 2 39
वेदना उत्पत्ति के हेतु 41
धर्म-अधर्म तथा अर्थ-अनर्थ 42
अष्टकवर्गिक मागन्दिय प्रश्न.. 45
अतीत और अनागत के धर्मों में आसक्त न हों.. 48
अकुशल धर्मों का पूर्णतया विनाश.. 52
महाकच्चान की गुण संपदा..56
भवसागर तरने में समर्थ.. 56
धर्म के प्रति निष्ठा 56
अग्र की उपाधि 57
विविध प्रकरण..59
बालक जटिल की बुद्धिमानी 59
इसिदत्त षडभिज्ञ हुआ 60
पूर्व जन्मों के कुशलकर्मों के फल 61
भगवान पदुमुत्तर का शासन काल.. 61
चैत्य निर्माण में स्वर्ण ईंट दान 61
परिशिष्ट..63
थेर अपदान 63
विपश्यना साधना केंद्र 64

प्रकाशकीय

भगवान के अस्सी महाश्रावकों में स्थविर महाकच्चान की गणना कुछ प्रमुखों में की जाती है। अपने पूर्वजन्मों के पुण्य कर्मों के फलस्वरूप वे एक राजपुरोहित कुल में जनमे। अवन्तिनरेश के राजपुरोहित के घर जनमे वह भी सुवर्ण वर्ण शरीर लिए हुए। पिता के निधन के बाद अवन्तिराज ने उन्हें राजपुरोहित के पद पर प्रतिष्ठित किया। कुछ ही दिनों बाद राजा ने उन्हें राजधानी उज्जैनी से बुद्ध को ले आने के लिये भेजा। सात लोगों के साथ कच्चान गये। वहां अपने सातों साथियों के साथ वे प्रव्रजित हो गये और परिश्रमपूर्वक विपश्यना करते हुए वे सभी अर्हंत हुए।

भगवान स्वयं तो उज्जैनी नहीं आये पर अपने प्रतिनिधि के रूप में, यह कहते हुए कि राजा तुम्हें देखकर प्रसन्न होंगे, सातों सहभिक्षुओं के साथ स्थविर को भेज दिया। उज्जैनी पहुँचने के पहले एक निगम में रहनेवाली अनाथ श्रेष्ठिकन्या को अपने आनुभाव से अवन्तिनरेश की अग्रमहिषी पद पर प्रतिष्ठित करा धर्म के प्रसार का मार्ग प्रशस्त कर दिया। अपने शिष्य सोण कुटिकण्ण के माध्यम से अवन्ति दक्षिणापथ में धर्म प्रसार हेतु कुछ और छूटें– उपसंपदा हेतु कम कोरम्, यात्रा हेतु उपानह का प्रयोग, सोने के लिये चर्म बिछावन का उपयोग– भी प्राप्त कर ली। इस प्रकार अवन्ति दक्षिणापथ के दुष्कर क्षेत्र में धर्म के प्रसार का श्रेय स्थविर महाकच्चान को ही जाता है। वे या तो जेतवन में भगवान के सान्निध्य में रहते या अवन्ति के कुररघर क्षेत्र में।

भगवान के दो अग्र श्रावकों, स्थविर महाकाश्यप और आयुष्मान आनंद की तरह स्थविर महाकच्चान भी भगवान के प्रमुख महाश्रावकों में थे। मथुरा के राजा अवन्तिपुत्र को अनेक दृष्टांत देकर उन्होंने समझाया कि चारों वर्ण– क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य एवं शूद्र– एक समान हैं। उनमें

कोई अंतर नहीं है। फिर एक ब्राह्मण को समझाया कि आयुवृद्ध होने से कोई अभिवादन के योग्य नहीं, अभिवादन के योग्य वह है जो शीलों का पालन करता है और जिसका मन उसके वश में है, भले ही वह उम्र में छोटा हो। एक समय उन्होंने बताया कि बुद्ध, धर्म, संघ, शील, त्याग और देवता– इन छः अनुस्मृतियों को आलंबन बनाकर अपने चित्त को विशुद्ध रखा जा सकता है।

पर, भगवान और भिक्षुओं की दृष्टि में जो संघ को उनका सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान था, वह था संक्षिप्त कथनों की विस्तृत व्याख्या। भगवान के संक्षिप्त कथनों को लेकर प्रायः भिक्षु उनके पास आते और स्थविर महाकच्चान उनकी विस्तृत व्याख्या करते। धर्म-अधर्म और अर्थ-अनर्थ, धातुनानात्व, भद्देकरत्त के उद्देश्य और विभंग, इंद्रिय-विषय और उनके विज्ञान के स्पर्श से बचने के उपाय के संबंध में दिये गये भगवान के संक्षिप्त उपदेश को उन्होंने बहुत अच्छी तरह से विस्तृत रूप में समझाया। उनके इस गुण के कारण भगवान उन्हें पंडित और महाप्रज्ञ कहते थे। एक बार मधुपिंडिकसुत्त, पेय्यालसुत्त और पारायणसुत्त की व्याख्या करने पर भगवान ने स्थविर महाकच्चान को व्याख्याकारों में अग्र की उपाधि दी। इसके लिए स्थविर ने एक लाख कल्प पूर्व भगवान पदुमुत्तर बुद्ध के समक्ष अपनी इच्छा प्रकट की थी।

उनके शिष्य आयुष्मान कुटिकण्ण ने अपनी मां को पूरे निगम के लोगों के साथ धर्मदेशना दी। उसी संदर्भ में नौ-सौ चोरों को भी प्रव्रजित किया जो मां के घर में चोरी करने आये थे। आयुष्मान सोण कुटिकण्ण द्वारा प्रव्रजित किये गये सभी भिक्षुओं को प्रसन्न होकर नौ गाथाओं में भगवान ने उपदेश दिया।

इस प्रकार स्थविर महाकच्चान द्वारा अवन्तिराज में धर्म के प्रसार में उनके शिष्य आयुष्मान सोण कुटिकण्ण ने योगदान किया।